वार्षिक प्रतिवेदन
2011-2012

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्

(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद्)

देहरादून (उत्तराखण्ड)

संरक्षक:
डॉ. वी.के. बहुगुणा, भा.व.से.
महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
देहरादून

सम्पादक मंडल:
शैवाल दासगुप्ता, उपमहानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प.
कुणाल सत्यार्थी, स.म.नि. (मीडिया व विस्तार)
एस.डी. शर्मा, सहायक महानिदेशक (मी. व वि), भा.वा.अ.शि.प. (18 अक्टूबर 2012 से 18 जनवरी 2013) तक
रमाकान्त मिश्र, अनुसंधान अधिकारी (मी व वि), भा.वा.अ.शि.प.

प्रकाशित द्वारा:
मीडिया एवं विस्तार प्रभाग
विस्तार निदेशालय
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ऑ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून- 248 006 (उत्तराखण्ड), भारत

मुद्रक :
एलाइड प्रिंटर्स,
84 नहर वाली गली, देहरादून

आवरण पृष्ठ:

1. उ.व.अ.सं., जबलपुर में घास जैव पुंज अध्ययन
2. व.अ.सं., देहरादून द्वारा विकसित प्रकाष्ठ शुष्कन के लिए निर्वात आपाक
3. आफरी, जोधपुर में *टैकोमेला अन्डुलाटा* में पुष्पण
4. उ.व.अ.सं., जबलपुर में खरपतवार जाल
5. व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर के बागवानी अधिकारियों को प्रशिक्षण

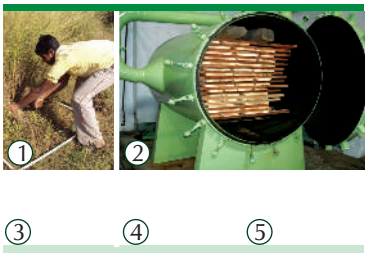

पृष्ठ आवरण :

अ. भारतीय वन कांग्रेस, 2011
   1. श्रीमती जयन्ती नटराजन, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।
   2. माननीय मंत्री सभा को सम्बोधित करते हुए

ब. ''डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर'' योजना
   1. समूह लाख संरोप्य
   2. समूह संग्रह

सत्यमेव जयते

डॉ. वी. के. बहुगुणा, भा.व.से
महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.
एवं कुलाधिपति, व.अ.सं. विश्वविद्यालय

Dr. V. K. Bahuguna, IFS
Director General, ICFRE
and Chancellor, FRI University

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
(आईएसओ 9001:2000 प्रमाणित संस्था)
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून–248 006 (उत्तराखण्ड)

Indian Council of Forestry Research and Education
Ministry of Environment and Forests,
Government of India
(An ISO 9001-2000 Certified Organisation)
P.O. New Forest, Dehra Dun - 248 006 (Uttarakhand)

प्राक्कथन

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् (भा.वा.अ.शि.प.) देहरादून, वानिकी सैक्टर में एक अग्रणी संस्था है, जो वैज्ञानिक विचार-विमर्श तथा पणधारियों को साधारण नव प्रवर्तनकारी प्रौद्योगिकियां प्रदान करके धारणीय प्रबन्धन तथा वानिकी संसाधनों के विकास के लिए वानिकी अनुसन्धान, शिक्षा तथा विस्तार के समग्र विकास में सक्रिय रुप से जुटी हुई है।

आज के चुनौतीपूर्ण परिवेश में वन सीमांत क्षेत्रों के प्रबन्धन को संकेन्द्रित करते हुए खाद्य तथा जल सुरक्षा की आवश्यकता बढ़ रही है। सीमांत वन क्षेत्रों में जल संरक्षण, लघु वन उत्पादों का धारणीय आधार पर प्रबन्धन, जैवविविधता तथा जलवायु परिवर्तन का समाकलन तथा इन वनों में रह रहे तीन करोड़ लोगों को खाद्य व आजीविका सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता का दायित्व पूरा करने के लिए सक्रिय प्रबन्धन हेतु वनों का विशेष महत्व है। परिषद् ने अपनी अन्य गतिविधियों के अतिरिक्त अपने क्रियाकलापों को किसानों, जनजातीय तथा ग्रामीण लोगों विशेषकर, महिलाओं के आजीविका मामलों पर केन्द्रित किया है। अनुसन्धान शोध क्षेत्रों का पुनर्निर्माण किया गया है तथा छः शोध क्षेत्र तथा 35 विषयों को अभिज्ञात किया गया है। प्रत्येक विषय के लिए राष्ट्रीय विषय वस्तु समन्वयक (एन.एस.एम.सी.) नियुक्ति किये गये है तथा वानिकी के विभिन्न विषयों पर 35 स्टेट ऑफ नॉलिज रिपोर्ट (एस.के.आर.एस.) तैयारी अधीन है।

प्रतिलिपिकरण को रोकने तथा संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाएं (ए.आई.सी.पी.), अन्तर संस्थागत परियोजनाएं तथा संजालीय परियोजनाएं परिकल्पित की गई है। राष्ट्रीय कार्यक्रम को तैयार करने, लागू करने और उसे कार्यान्वित करने लिए सभी छः शोध क्षेत्रों में राष्ट्रीय परियोजना निदेशकों को नियुक्त किया गया है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि भारत के वन प्रारुपों के संघटन का संशोधन गत 1968 में किया गया था, परिषद् ने देश में वन वनस्पति के लिए चेन्ज मैट्रिक्स तैयार करने के लिए एक टास्क फोर्स गठित की है। भा.वा.अ.शि.प. को कर्नाटक के बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिलों के खनन प्रभावित क्षेत्रों के पुनरुद्धार तथा पुनर्स्थापन (आर.एण्ड आर.) योजना के लिए परामर्शी सेवाओं का कार्य सौंपा गया है। दस खदानों के लिए परिषद् द्वारा तैयार की गई पुनरुद्धार तथा पुर्नस्थापन योजनाओं को हाल ही में माननीय सर्वोच्च न्यायालय की केन्द्रीय एम्पावर्ड समिति (सी.इ.सी.) द्वारा अनुमोदित किया गया है।

परिषद् द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के प्रचार के उद्देश्य के साथ पंचवर्षीय योजना के अधीन परिषद् में विभिन्न राज्यों/केन्द्र शासित राज्यों में 26 वन विज्ञान केन्द्र स्थापित किये गये है। हालांकि यह पर्याप्त नहीं है अतः आवश्यकता तथा संसाधनों के मध्य के अन्तराल को भरने के लिए वन विज्ञान केन्द्रों की भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् (आई.सी.ए.आर.), नई दिल्ली के कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ नेटवर्किंग के लिए हमने सहयोग प्रारम्भ कर दिया है। भा.वा.अ.शि.प. ने एक अनुसन्धान परियोजना के पूर्ण होने पर उपभोक्ताओं/ पणधारियों तक प्रौद्योगिकियों के तत्काल हस्तांतरण के लिए नव प्रवर्तनकारी परियोजना ''डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर'' प्रारम्भ की है। भा.वा.अ.शि.प. देश में वानिकी शिक्षा कों प्रोत्साहित करने के लिए अध्यादेशित है। इस वर्ष हमने दस विश्वविद्यालयों को ₹ 100.00 लाख की राशि अनुदान के रुप में दी है। इसके अतिरिक्त भा.वा.अ.शि.प., भा.व.से. (आई.एफ.एस.) अधिकारियों के मध्य कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम फेज- III में सक्रिय रुप से कार्यरत है।

इस वर्ष परिषद् ने नई दिल्ली में पहली बार भारतीय वन कांग्रेस का आयोजन किया। 50 संस्थाओं से 550 सहभागियों ने इस कांग्रेस में सहभागिता की। इस कार्यक्रम के परिणामस्वरुप नई दिल्ली वन चार्टर 2011 अंगीकृत किया गया। मुझे भा.वा.अ.शि.प. वार्षिक प्रतिवेदन 2011-12 को प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है तथा मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह वर्ष के दौरान भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किए गए क्रियाकलापों का संक्षिप्त विवरण उपलब्ध करवायेगी।

(डॉ. वी. के. बहुगुणा)

दूरभाष/Phone : 0135-2759382 (क)
पी.ए.वी.एक्स. : 0135-2224855/2224333(क)
: 0135-2754748 (आ)
: 0135-2224509 (आ)

ई.मेल/email : bahugunaifs@gmail.com
: bahugunaifs@yahoo.com
: dg@icfre.org
फैक्स/Fax : 0135-2755353

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् की संगठनात्मक संरचना

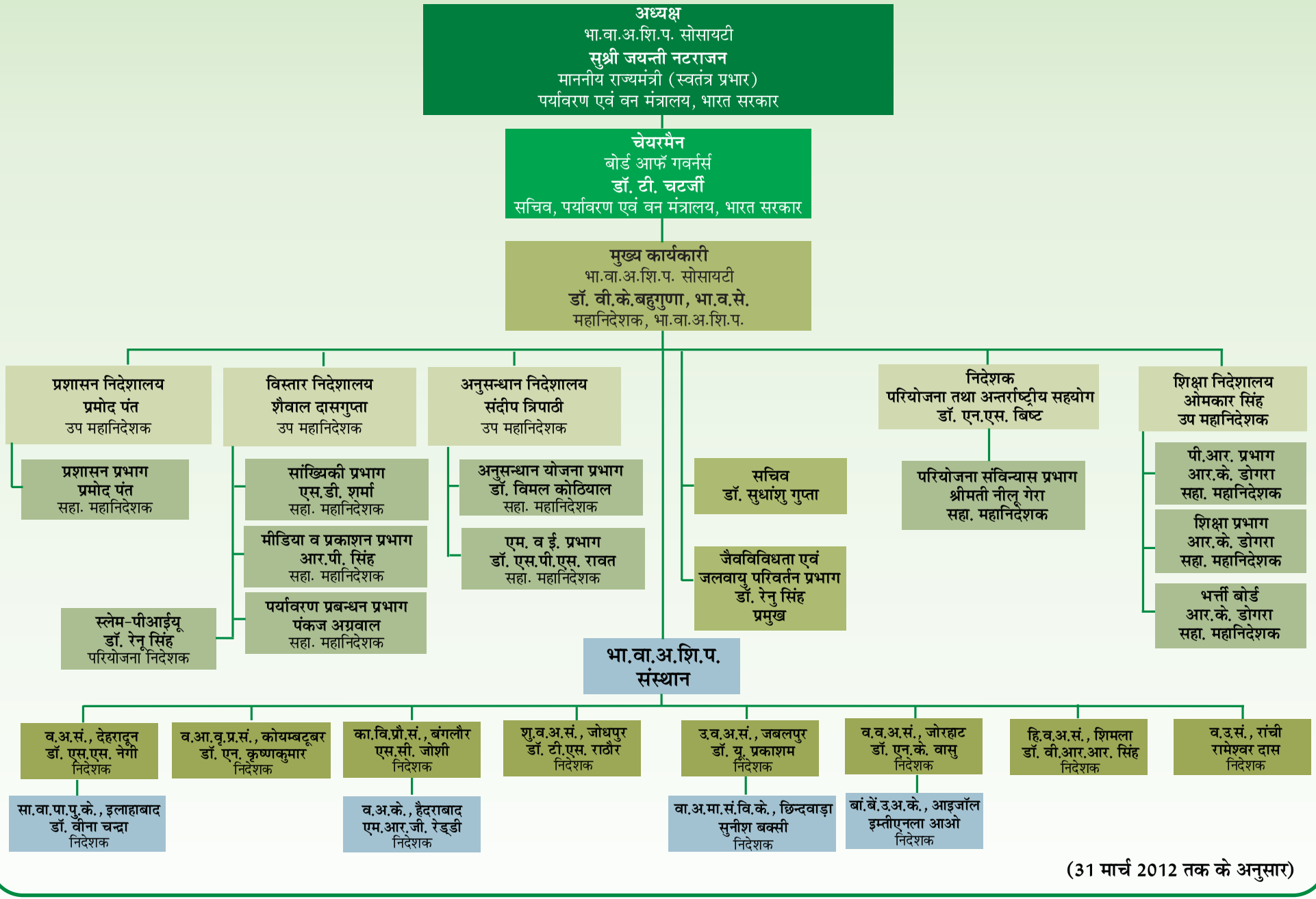

(31 मार्च 2012 तक के अनुसार)